पोथी

जपुजी साहब

और

हजारादी शब्दादि ।

वाबू रामसिंह पुजारी छोटी संगत
द्वारा
प्रकाशित ।

११२ नं० काटन ष्ट्रीट, कलकत्ता ।

भारतमित्र प्रेस ।
८७ नम्बर चोरवगान, कलकत्ता
श्रीकृष्णानन्द शर्म्मा द्वारा मुद्रित
सं० १९५३

१ ੴ सति नाम करता पुरखु निरभउ निरवैरु
अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसाद ॥

जपु ॥

आदि सचु जुगादि सचु। है भी
सचु नानक होसी भी सचु ॥ १ ॥

सोचै सोचि न होवई जे सोची लख-
वार। चुपै चुप न होवई जे लाइ रहा

लिव तार ॥ भुखिआ भुख न उतरी जे बंना पुरीआ भार ॥ सहस सिआणपा लख होहि त इक न चलै नालि । किव सचिआरा होईऐ किव कूड़ै तुटै पालि ॥ हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि ॥ १ ॥

हुकमी होवनि आकार हुकम न कहिआ जाई । हुकमी होवनि जीअ हुकमि मिलै वडिआई ॥ हुकमी उत्तम नीचु हुकमि लिखि दुख सुख पाईअहि । इक ना हुकमी बखसीस इक हुकमी सदा भवाईअहि । हुकमै अंदर सभु को बाहरि हुकम न कोइ । ना-

नक हुकमै जे बूझै त हौं मै कहै न कोइ ॥ २ ॥

गावै को ताणु होवै किसै ताणु। गावै को दाति जाणै नीसाणु। गावै को गुण वडिआईआ चार। गावै को विदिआ विखमु वीचारु। गावै को साजि करे तनु खेह। गावै को जीअ लै फिरि देह। गावै को जापै दिसै दूरि। गावै को वेखै हादरा हदूरि॥ कथना कथी न आवै तोटि। कथि कथि कथी कोटी कोटि कोटि। देदा दे लैदे थकि पाहि। जुगा जुगंतरि खाही खाहि॥ हुकमी हुकमु चलाए राहु। नानक विगसै वेपरवाहु॥ ३॥

साचा साहिबु साचु नाइ भाखिआ भाऊ अपारु। आखहि मंगहि देहि देहि दाति करे दातारु॥ फेरि कि अगै र-खीऐ जितु दिसै दरबारु। मुहौं कि बोलणु बोलीऐ जितु सुणि धरे पिआरु। अमृतु वेला सचुनाउ वडिआई वीचारु। करमी आवै कपड़ा नदरी मोखु दुआरु। नानक एवै जाणीऐ सभु आपे सचि-आरु॥ ४॥

थापिया न जाइ कीता न होइ। आपे आप निरंजनु सोइ॥ जिन सेविआ तिनि पाइआ मानु। नानक गावीऐ गुणी निधान। गावीऐ सुणीऐ मन

रखीऐ भाउ। दुखु परिहरि सुखु घरि लै जाइ॥ गुर मुखि नादं गुर मुखि वेदं गुरमुखि रहिआ समाई। गुर ईश्वर गुर गोरख बरमा गुर पारबती माई॥ जेहउ जाणा आखा नाही कहणा कथनु न जाई। गुरा इक देहि बुझाई। सभना जीआ का इक दाता सो मैं विसरि न जाई॥ ५॥

तीरथि नावा जे तिसु भावा विणु भाणे कि नाइ करी। जेती सिरठि उपाई वेखा विणु करमा कि मिलै लई॥ मति विचि रतन जवाहर माणिक जे इक गुर की सिख सुणी। गुरा इक

देहि बुझाइ ॥ सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाइ ॥ ६ ॥

जे जुग चारे आरजा होर दसूणी होइ । नवा खंडा विचि जाणीऐ नालि चलै सभु कोइ ॥ चंगा नाउ रखाइ कै जसु कीरति जगि लेइ । जे तिसु नदरि न आवई तवात न पुछै के ॥ कीटा अन्दरि कीटु करि दोसी दोस धरे । नानक निरगुणि गुण करे गुणवंतिआ गुणु दे ॥ तेहा कोइ न सुझई जि तिसु गुण कोइ करे ॥ ७ ॥

सुणिऐ सिद्धपीर सुरनाथ । सुणिऐ धरत धवल आकास सुणिऐ दीप लोअ

पाताल। सुणिऐ पोहि नसकै कालु॥ नानक भगता सदा विगास। सुणिऐ दूख पापु का नासु॥ ८॥

सुणिऐ ईश्वर बरमा इंदु। सुणिऐ मुखि सलाहण मंदु॥ सुणिऐ जोगि जुगति तनि भेद। सुणिऐ सासत सिमृति वेद॥ नानक भगता सदा विगासु। सुणिऐ दूख पाप का नासु॥ ९॥

सुणिऐ सतु सन्तोख गिआनु। सुणिऐ अठसठि का इसनानु॥ सुणिऐ पढ़ि २ पावहि मानु। सुणिऐ लागै सहजि धिआनु॥ नानक भगता सदा बिगासु। सुणिऐ दूख पाप का नासु॥ १०॥

सुणिऐ सरा गुणा के गाह । सुणिऐ सेख पीर पातिसाह ॥ सुणिऐ अंधे पावहि राहु । सुणिऐ हाथ होवै असगाहु ॥ नानक भगता सदा विगासु । सुणिऐ दूख पापका नासु ॥ ११ ॥

मंने की गति कही न जाइ । जे को कहै पिछै पछताइ ॥ कागदि कलम नलिखणहारु । मंने का बहि करन वीचारु ॥ ऐसा नाम निरञ्जनु होइ । जेको मंनि जाणै मनि कोइ ॥ १२ ॥

मंनै सुरति होवै मनि बुधि । मंनै सगल भवण की सुधि ॥ मंनै मुहि चोटा ना खाइ । मंनै जमकै साथि न जाइ ॥

ऐसा नामु निरंजनु होइ। जे को मंनि जाणै मनि कोइ॥ १३॥

मंनै मारगि ठाक न पाइ। मंनै पति सिउ परगटु जाइ॥ मंनै मगु न चलै पंथु। मंनै धरम सेती सनबंधु॥ ऐसा नाम निरंजनु होई। जे को मंनि जाणै मनि कोइ॥ १४॥

मंनै पावहि मोख दुआरु। मंनै परवारै साधारु॥ मंनै तरै तारे गुरु सिख। मंनै नानक भवहि न भिख॥ ऐसा नामु निरंजन होइ जे। को मंनि जाणे मनि कोइ॥ १५॥

पञ्च परवाण पञ्च परधान। पञ्च

पावहि दरगहि मानु ॥ पञ्चे सोहहि दररा जानु । पञ्चा का गुरु एक धिआनु ॥ जे को कहै करै वीचारु । करते कै करणै नाही सुमारु ॥ धौलु धरमु दया का पूतु । सन्तोखु थापि रखिआ जिनि सूतु ॥ जे को बुझै होवै सचिआरु । धवलै ऊपरि केता भारु ॥ धरती होरु परै होरु होरु । तिसते भारु तलै कवणु जोरु ॥ जीअ जाति रङ्गा के नाव । सभना लिखिआ वुड़ी कलाम ॥ एहु लेखा लिखि जाणै कोइ । लेखा लिखिआ केता होइ ॥ केता ताणु सुआलिहु रूपु केती दाति जाणै कौणु कूत ॥ कीता

पसाऊ एको कवाऊ। तिसते होए लख दरीआउ॥ कुदरति कवण कहा वीचारु। वारिआ न जावा एक वार॥ जो तुधु भावै साई भली कार। तू सदा सलामति निरंकार॥ १६॥

असंख जप असंख भाउ। असंख पूजा असंख तप ताउ॥ असंख गरंथ मुखि वेद पाठ। असंख जोग मन रहहि उदास॥ असंख भगत गुण गिआन वीचारु। असंख सती असंख दातार॥ असंख सूर मुह भखसार। असंख मोनि लिवलाइ तार॥ कुदरति कवण कहा वीचारु। वारिआ न

जावा एक वार ॥ जो तुधु भावै साई भली कार। तू सदा सलामति निरंकार ॥ १७ ॥

असंख मूरख अंध घोर। असंख चोर हराम खोर ॥ असंख अमर करि जाहिं जोर। असंख गलवढ हतिया कमाहि ॥ असंख पापी पापु करि जाहि। असंख कूड़िआर कूड़े फिराहि ॥ असंख मलेछ मलु भख खाहि। असंख निंदक सिर करहि भारु ॥ नानक नीचु कहै वीचार। वारिआ न जावा एक वार ॥ जो तुधु भावै साई भली कार। तू सदा सलामति निरंकार ॥ १८॥

असङ्ख नाव असङ्ख थाव। अगम अगंम

असंख लोअ। असंख कहहि सिरि भारु होइ। अखरी नामु अखरी सालाह॥ अखरी गिआनु गीत गुण गाह। अखरी लिखणु बोलणु बाणि॥ अखरा सिरि संजोगु वखाणि। जिनि एहि लिखे तिसु सिर नाहि॥ जिव फुरमाए तिव तिव पाहि। जेता कीता तेता नाउ॥ विणु नावै नाहीं को थाउ। कुदरति कवण कहा वीचारु॥ वारिआ न जावा एक बार। जो तुधु भावै साई भली कार॥ तू सदा सलामति निरङ्कार॥ १९॥

भरीऐ हथु पैरु तनु देह। पाणी धोतै उतरसु खेह॥ मूत पलीती कपडु

होइ। दे साबूणु लईऐ उहु धोइ॥ भरीऐ मति पापा कै सङ्गि। उहु धोपै नावै कै रङ्गि॥ पुंनी पापी आखण नाहि। करि करि करणा लिखि लै जा-हु॥ आपे बीजि आपेही खाहु। ना-नक हुकमी आवहु जाहु॥ २०॥

तीरथु तपु दइआ दतु दानु। जे कों पावै तिल का मानु॥ सुणिआ मं-निआ मनि कीता भाउ। अन्तर गति तीरथि मलि नाउ॥ सभि गुण तेरे मै नाही कोइ। विणु गुण कीते भक्ति न होइ॥ स्वस्ति आथि बाणी बरमाउ। सति सुहाणु सदा मनि चाउ॥ कवण

सु वेला वखतु कवणु कवण थिति कवण वारु। कवणु सि रुति माहु कवणु जितु होआ आकारु ॥ वेल न पाईआ पंडतीं जि होवै लेखु पुराणु। वखतु न पाइउ कादीआ जि लिखनि लेखु कुराणु। थिति वारु ना जोगी जाणै रुति माहु ना कोई। जा करता सिरठी कउ साजे आपे जाणै सोई। किव करि आखा किव सालाही किउ वरनी किव जाणा। नानक आखणि सभु को आखै इकदू ईकु सिआणा ॥ वडा साहिबु वडी नाई कीता जाका होवै। नानक जे को आपो जाणै अगै गइआ न सोहै ॥ २१ ॥

पाताला पाताल लख आगासा आगास उड़क २ भालि थके वेद कहनि इक वात। सहस अठारह कहनि कतेबा असुलू इकु धातु। लेखा होइ त लिखीऐ लेखै होइ विणासु। नानक वड़ा आखीऐ आपे जाणै आपु॥ २२॥

सालाही सालाहि एती सुरति न पाईआ। नदी अतै वाह पवहि समुंदि न जाणी अहि। समुन्द साह सुल-तान गिरहा सेती मालु धनु। कीड़ी तुलि न होवनी जे तिसु मनहु न वीस-रहि॥ २३॥

अंतु न सिफती कहणि न अन्तु।

अन्तु न करणै देणि न अन्तु ॥ अन्तु न वेखणि सुणणि न अन्तु । अन्तु न जापै किआ मनि मन्तु ॥ अन्तु न जापै कीता आकारु । अन्तु न जापै पारावारु ॥ अन्त कारणि केते बिललाहि । ताके अंत न पाये जाहि ॥ एहु अन्तु न जाणै कोइ । बहुता कहीऐ बहुता होइ ॥ वडा साहिबु ऊचा थाउ । ऊचे उपरि ऊचा नाउ ॥ एवड ऊचा होवै कोइ । तिसु ऊचे कउ जाणै सोइ ॥ जेवड आपि जाणै आपि आपि । नानक नदरी करमी दाति ॥ २४ ॥ बहुता करमु लिखिआ ना जाइ । वडा दाता तिलु न तमाइ ॥ केते

मंगहि जोध अपार। केतिआ गणत नही वीचारु ॥ केते खपि तुटहि वेकार। केते लै लै मुकरु पाहि ॥ केते मूरख खाही खाहि। केतिआ दूख भूख सद मार ॥ एहि भी दाति तेरी दातार। बन्द खलासी भाणै होइ ॥ होरु आखि न सकै कोइ। जे को खाइकु आखणि पाइ ॥ उहु जाणै जेतीआ मुहि खाहि। आपे जाणै आपे देइ ॥ आखहि सि भि केई केई। जिसनो बखसे सिफति सलाह ॥ नानक पाति साही पातिसाहु ॥ २५ ॥ अमुल गुण अमुल वापार। अमुल वापारीए अमुल भण्डार ॥ अमुल आवहि

अमुल लै जाहि। अमुल भाइ अमुला समाहि ॥ अमुल धरमु अमुल दीवाणु। अमुल तुलु अमुलु परवाणु॥ अमुलु बखसीस अमुल नीसाणु। अमुल करमु अमुल फुरमाणु॥ अमुलो अमुल आखिआ न जाइ। आखि आखि रहे लिवलाइ॥ आखहि वेद पाठ पुराण। आखहि पड़े करहि वखिआण॥ आखहि बरमे आखहि इंदु। आखहि गोपी तै गोविन्द॥ आखहि ईश्वर आखहि सिध। आखहि केते कीते बुध॥ आखहि दानव आखहि देव। आखहि सुरि नर मुनि जन सेव॥ केते आखहि आखणि

पाहि । केते कहि कहि उठि उठि जाहि ॥
एते कीते होरि करेहि । ता आखिन
सकहि केई केइ ॥ जे वड भावै ते
वड होइ । नानक जाणै साचा सोइ ॥
जे को आखै बोलु विगाड़ । ता लि-
खीऐ सिरि गावारा गावारु ॥ २६ ॥
सो दरु केहा सो घरु केहा जितु बहि
सरब समाले । वाजे नाद अनेक असंखा
केते वावण हारे ॥ केते राग परी सिउ
कहीअनि केते गावण हारे । गावहि
तुहनो पउण पाणी बैसंतरु गावै राजा
धरमु दुआरे ॥ गावहि चितु गुपुत
लिखि जाणहि लिखि२ धरमु विचारे ।

गावहि ईश्वर बरमा देवी सोहनि सदा सवारे ॥ गावहि इंद इन्दासणि बैठे देवतिआ दरि नाले । गावहि सिध स-माधी अन्दरि गावनि साध बिचारे ॥ गावनि जती सती सन्तोषी गावहि वीर करारे । गावनि पण्डित पड़नि रखी-सर जुग जुग वेदा नाले ॥ गावहि मोहणिआ मनु मोहनि सुरगा मछ पइ आले । गावनि रतन उपाए तेरे अठ सठि तीरथ नाले ॥ गावहि जोध म-हाबल सूरा गावहि खाणी चारे । गा-वहि खंड मंडल वरभंडा करि करि रखे धार ॥ सेई तुधुनो गावहि जो तुधु

गावनि रतें तेरे भगत रसाले। होरि केते गावनि सि मै चिति न आवनि नानक किआ विचारे॥ सोई सोई सदा सच् साहिबु साचा साची नाई। है भी होसी जाइ न जासी रचना जिनि रचाई॥ रङ्गी रङ्गी भाती करिकरि जिनसी माइआ जिनि उपाई। करि २ वेखै कीता आपणा जिवतिसदी वडि आई॥ जो तिसु भावै सोई करसी हुकुमु न करणा जाई। सो पातिसाहु साहा पातिसाहिबु नानक र-हणु राजाई॥ २७॥ मुंदा सन्तोखु सरमु पत झोली धिआनकी करहि बिभूति। खिंथा कालु कुआरी काइआ

जुगति डंडा परतीति ।। आई पन्थी सगल जमाती मनि जीतै जग जीतु ।
आदेसु तिसै आदेसु आदि अनीलु अनादि अनाहत जुगु जुगु एको वेसु ॥२८॥
भुगति गिआनु दइआ भंडारणि घटि घटि वाजहि नाद । आपि नाथु नाथी सभ जाकी रिधि सिधि अवरा साद ।।
संजोगु विजोगु दुइ कार चलावहि लेखे आवहि भाग । आदेसु तिसै आदेसु आदि अनीलु अनादि अनाहत जुगु जुगु एको वेसु ।। २९ ।। एका माई जुगति विआई तिनि चेले परवाणु । इकु संसारी इकु भंडारी इकु लाए दीबाणु ॥ जिंव तिसु

भावै तिवै चलावै जिव होवै फुरमाणु उहु वेखैउना नदरि न आवै बहुता एहु विडाणु। आदेसु तिसै आदेसु आदि अनीलु अनादि अनाहत जुगु जुगु एको वेसु ॥ ३० ॥ आसणु लोइ लोइ भंडार। जो किछु पाइआ सु एका वार॥ कर कर वेखै सिरजणहारु। नानक सचेकी साची कार॥ आदेसु तिसै आदेसु आदि अनीलु अनादि अनाहत जुगु जुगु एको वेसु ॥ ३१ ॥ एकदू जीभौ लख होहि लखहोवहि लख वीस। लखु लखु गेड़ा आखीअहि एकु नाम जगदीस॥ एतु राहि पति

पवड़िश्रा चड़ीऐ होइ इकीस ॥ सुणि गला आकास की कीटा आई रीस । नानक नदरी पाईऐ कूड़ी कूड़ै ठीस ॥ ३२ ॥ आखणि जोरु चुपै नह जोरु । जोरु न मङ्गणि देणि न जोरु ॥ जोरु न जीवणि मरणि नह जोरु । जोरु न राजि मालि मनि सोरु ॥ जोरु न सुरती गिआनि वीचारि । जोरु न जुगती छुटै संसारु ॥ जिसु हथि जोरु करि वेखै सोइ नानक उतमु नीचु न कोइ ॥ ३३ ॥ राती रुती थिती वार ॥ पवण पाणी अगनी पाताल । तिसु विचि धरती थापि रखी धरम साल ॥ तिसु विचि

जीअ जुगति के रङ्ग। तिनके नाम अनेक अनन्त॥ करमी करमी होइ वीचारु। सचा आपि सचा दरबारु॥ तिथै सोहनि पञ्च परवाणु। नदरी करमि पवै निसाणु॥ कच पकाई उथै पाइ। नानक गइआ जापै जाइ॥ ३४॥

धरम खंड का एहो धरमु। गिआन खंड का आखहु करमु॥ केते पवण पाणी वैसन्तर केते कान महेस। केते बरमे घाड़ति घड़ीअहि रूप रङ्ग के वेसु॥ केतीआ करम भूमी मेर केते केते धू उपदेस। केते इन्द चन्द सूर केते केते मंडल देस॥ केते सिद्ध बुद्धि नाथ केते केते

देवी वेस । केते देव दानव मुनि केते २ रतन समुंद ॥ केतीआ खाणी केतीआ बाणी केते पात नरिन्द । केतीआ सुरती सेवक केते नानक अन्तु न अन्तु ॥ ३५ ॥ गिआन खंड महि गिआनु परचंड । तिथै नादि बिनोद कोड अनन्द ॥ सरम खंडकी बाणी रूप । तिथै घाड़त घ-ड़ीऐ बहुतु अनूपु ॥ ताकीआ गला कथीआ ना जाहि । जे को कहै पीछै पछिताइ ॥ तिथै घड़ीऐ सुरति मति मनि बुधि । तिथै घड़ीऐ सुरा सिधा की सुधि ॥ ३६ ॥ करम खंड कीं बाणी जोरु । तिथै होरु न कोइ होरु ॥ तिथै जोध महा-

बल सूर। तिन महि रामु रहिआ भर
पूर॥ तिथै सीतो सीता महिमा माहि।
ताके रूप न कथने जाहि॥ नाउह
मरहि न ठागे जाहि। जिनकै रामु
वसै मन माहि॥ तिथै भगत वसहि कै
लोअ। करहि अनन्द सचामनि सोइ॥
सच खंडि वसै निरंकारु। करि करि
वेखै नदरि निहालु॥ तिथै खंड मंडल
वर भंड। जे को कथै त अन्त न अन्त॥
तिथै लोअ लोअ आकार। जिव जिव
हुकमु तिवै तिव कार॥ वेखै विगसै करि
वीचारु। नानक कथना करड़ा सारु॥३७॥
जतु पहारा धीरज सुनिआरु। अ-

हरणि मति वेद हथीआरु ॥ भउखला अगनि तप ताउ । भांडा भाउ अमृत तितुढालि ॥ घड़ीऐ सबद सची टक-साल । जिन कउ नदरि करमु तिनकार ॥ नानक नदरी नदर निहाल ॥ ३८ ॥

स्लोक

पवणु गुरू पाणी पीता माता धरति महत । दिवसु राति दुइ दाई दाइआ खेलै सगल जगत ॥ चङ्गिआईआ बुरि-आईआ वाचै धरमु हदूरि । करमी आपो आपणी केनेड़ै केदूरि ॥ जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि । नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि ॥

७ सबद हजारे के

माझ महल्ला ५ चौपदे घर १

१ ॐसति गुरु प्रसादि। मेरा मन लोचै गुरु दर्शन ताईं॥ बिलप करै चातक की नाईं। तृषा न उतरै सांति न आवै॥ बिन दर्शन सन्त पियारे जीउ ॥ १ ॥ हौ घोली जीउ घोलि घुमाई। गुरू दर्शन सन्त पियेरे जीउ ॥१॥ रहाउ॥ तेरा मुख सुहावा जीउ सहज धुनि वाणी। चिरू होआ देखे शारङ्ग पाणी॥ धन्न सुदेस जहां तुं वस्या मेरे सज्जण मीत मुरारे जीउ॥ २॥ हौ घोली हौ घोल

घुमाई गुरु सज्जण मीत मुरारे जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इक घड़ी न मिलते ता कलियुग होता। हुण कदि मिलिये प्रिया तुं भगवन्ता ॥ मोहि रैणि न विहावै नीदन आवै बिन देखे गुरु दरबारे जीउ ॥ २ ॥ हो घोली जीउ घोलि घुमाई तिस सच्चे गुरु दरबारे जीउ ॥ १ ॥ ॥ रहाउ ॥ भाग होआ गुरु सन्त मिलाया। प्रभु अबिनाशी घर महि पाया ॥ सेवक रीपल चसान विछुड़ा जन नानक दास तुमारे जीउ ॥ ४ ॥ हौं घोली जी घोलि घुमाई। जन नानक दास तुमारे जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥

घना श्री महल्ला १ घरु १ चौपदे

जीउ डरत है आपणा कैस्यो करी पुकार। दूख विसारण सेबिआ सदा २ दातार ॥ १ ॥ साहिब मेरा नीत नवा सदा सदा दातार ॥ रहाउ ॥ अन दिन साहिब सेबियै अन्त छड़ाये सोइ । सुणि सुणिमेरी कामणी पार उतारा होइ ॥ २ ॥ दयाल तेरै नाम तरा सद कुर्बाणै जाउ ॥ ३ ॥ ॥ रहाउ ॥ सर्बं साचा एक है दूजा नाही कोइ । ताकी सेवा सो करै जाको नदरि करेइ ॥ ॥ ३ ॥ तुध बाझ पिया रैकिव रहा । साव डियाई देहि जित नाम तेरै लागि रहा ॥

दूजा नाही कोइ जिसु आगै प्यारे जाइ कहा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सेवी साहिब आपणा और याची कोइ । नानक ताका दास है बिन्द २ चुख चुख होइ ॥ ४ ॥ साहिब तेरेनामि विटहु बिन्द बिन्द चुख चुख होइ ॥ १ ॥

तिलंग महला १ घर ३

ॐ सति गुरु प्रसादि

इह तन माया पाहिया प्यारे लीतड़ा लबि रंगाये । मेरे कन्त न भावै चोलड़ा प्यारे क्यो धन सेजै जाये ॥ १ ॥ हौ कुरबानै जाउँ मिहवाना हौ कुर्बानै जाउ । हौ कुर्बानै जाउं तिनाके लैन जो तेरा

नाउँ ॥ लैन जो तेरा नाउँ तिनाकै हौ सद कुर्बानै जाउँ ॥ १ ॥ रहउ ॥ काया रङ्गणि जे थीयै प्यारे पाइयै नाउ मजीठ । रङ्गण वाला जे रङ्गे साहिब ऐसा रङ्ग न डीठ ॥ २ ॥ जिनके चोले रतड़े प्यारे कन्त तिनाके पास । धूड़ि तिनाकी जे मिलै जी कहु नानककी अरदास ॥ ३ ॥ आपे साजे आपे रङ्गे आपे नदरि करेइ । नानक कामणि कंतै भावै आपे ही रावेइ ॥ ४ ॥ ३ ॥

तिलङ्ग महला १

इयानड़िये मानड़ा काइ करेहि । आपनड़े घर हरि रङ्गो की नमाणेहि ॥

शहु नैणी धन कम्मलिये वाहर क्या ढू-
ढेहि। भै कीया देहि सलाईया नैणी
भावका कर सीगारो॥ ता सोहागणि
जाणियै लागी जा शहु घरे पियारो। इ-
याणी बाली क्या करे जा धन कन्त न
भावै॥ करण पलाह करे बहुतेरे साधन
महल न पावै। विण कर्मा किछु पा-
इये नाही जे बहुतेरा धावै॥ लब्ब लोभ
अहंकार की माती माया माहि समाणीं।
इनी बाती शहु पाइयै नाही भई कामणि
इयानी॥ २॥ जाइ पुछहु सोहागणी वा
है किनी बाती सहु पाइये। जो कुछ करे
सो भला करि मानीयै हिकमति हुकम चू

काइये ॥ जाकै प्रेम पदारथ पाइयै तउ चरणी चित लाइयै। शहु कहैं सो कीजे तन मनो दीजै ऐसा परमलुलाइयै॥ एव कहहि सोहागणी भैणे इनी बाती शहु पाइयै ॥ ३ ॥ आप गवाइयै ता शहु पाइयै और कैसी चतुराई। शहु नदरि करि देखै सो दिन लेखै कामणि नव निधि पाई ॥ आपणै कन्त पियारी सा सोहा-गणि नानक सासभराई। ऐसे रङ्गराती सहजकी माती अहि निसि भाइ समाणी ॥ सुन्दरि साइ सरूप बिचक्खणि कहियै सा सियाणी ॥ ४ ॥ ४ ॥

———

सूही महला १

कौण त राजी कौण तुला तेरा कवण सराफ बुलावा। कौण गुरु कैपहिं दीख्या लेवा कैपहि मुल्ल करावा ॥१॥ मेरे लाल जीउ तेरा अन्त न जाणा। तूं जल थल महियल भर पुरि लीणा तूं आपे सर्व समाणा ॥ १ ॥ रहउ ॥ मन ता राजी चित तुला तेरी सेव सराफ कमावा। घटही भीतर सो शहु तोली इन बिधि चित्तु रहावा ॥ २ ॥ आपे कंडा तोल तराजो आपे तोलण हारा। आपे देखि आपे बूझे आपे है वणजारा ॥ ३ ॥ अंधला नीच जाति पर देशी खिन आवे तिल जावै।

ताकी सङ्गति नानक रहिदा क्यो करि मूढ़ा पावै ॥ ४ ॥ ५ ॥

रागु बिलावल महला १ चौपदे घर १

तू सुलतान कहा हौ मीया तेरी कवन वडाई। जो तू देहि सु कहा सुवामी मै मूरख कहण न जाई। १। तेरे गुण गावा देहि बुझाई। जैसे सचि महि रहो रजाई ॥ १ ॥ रहउ ॥ जो किछु होआ सभ किछु तुझते तेरी सभ असनाई। तेरा अन्त न जाणा मेरे साहिब मै अन्धले क्या चतुराई ॥ २ ॥ क्या हौ कथी कथि कथि देखा मै अकथन कथना जाई। जो तुध भावै सोई आखा तिल

तेरी वडियाइ ॥ ३ ॥ एते कुकरहौ बेगाना भउका इसु तन ताई। भगति हीणा नानक जे होइगा ता खसमै ना उन जाई ॥ ४ ॥ ६ ॥

बिलावल महला १

मन मन्दर तन वेस कलन्दर घटही तीरथ नावा। एक शबद मेरै प्रान बसत है बाहुड़ि जन्म न आवा ॥ १ ॥ मन बेध्या दयाल सेती मेरी माई कौण जाणै पीर पराई। हम नाहीं चिंत पराई ॥ १ ॥ रहउ ॥ अगम अगोचर अलख अपारा चिन्ता करहु हमारी। जल थल महि अल भरि पुरि लीणा घट घट ज्यो

ति तुमारी ॥ २ ॥ सिक्ख मति सभ बुधि तुमारी मन्दिर छावा तेरे । तुझ बिन और न जाणा मेरे साहिबा गुण गावा नित तेरे ॥ ३ ॥ जीय जन्त सभि सरण तुमारी सर्ब चिंत तुध पासे । जो तुधु भावे सोई चङ्गा इक नानककी अरदासि ॥ ४ ॥ ७ ॥

मारू महला ५

अच्चुत पार ब्रह्म परमेसर अंतर्जामी । मधु सूदन दामोदर स्वामी ॥ रुषि केश गोबर्धन धारी । मुरली मनोहर हरि रङ्गा ॥ १ ॥ मोहन माधो क्रसन मुरारे । जगदीसुर हरि जीउ असुर सं-

धारे ॥ जग जीवन अबिनाशी ठाकुर घट घट वासी है सङ्गा ॥ २ ॥ धरणी धर ईस नरसिंघ नाराइण। दाड़ाग्रे पृथिमि धरायण ॥ बावन रूप कीया तुध करते सभही सेती है चङ्गा ॥ ३ ॥ श्री रामचन्द्र जिसु रूप नरेख्या। बन वाली चक्रपाणि दरस अनूप्या ॥ सहस नेत्र मूरत है सहसा। इक दाता सभ हैं मङ्गा ॥ ४ ॥ भगति वछल अनाथ हि- नाथे। गोपीनाथ सगल है साथे ॥ बास- देव निरञ्जन दाते। बरनि न साकी गुण अङ्गा ॥ ५ ॥ मुकन्द मनोहर लक्मी नाराय्ण। द्रोपती लज्जा निवार

उधारण ॥ कमलाकन्त करहि कन्तुहल अनद बिनोदी निहसङ्गा ॥ ६ ॥ अमोघ दर्सन अजूनी सम्भौ । अकाल मूरति जिसु कदे नाहीखौ ॥ अबिनासी अबिगत अगोचर । सभ किछु तुझही है लगा ॥ ७ ॥ श्री रङ्ग बैकुण्ठ के बासी मछ कछ कूर्म आज्ञा औतरासी । केशव चलत करहि निहरारे ॥ कीता लोड़हि सो होएगा ॥ ८ ॥ निराहारी निर्बैर समाया । धार खेल चतुर्भुज कहाया ॥ सावल सुन्दर रूप बनावहि । बेण सुनत सभ मोहैगा ॥ ९ ॥ बनमाला बिभुषन कवल नैन । सुन्दर कुंडल मु-

कुट बैन ॥ सङ्ख चक्र गदा है धारी । महा सारथी सत सङ्गा ॥ १० ॥ पीत पितम्बर त्रिभवण धणी । जगन्नाथ गोपाल मुख भणों ॥ सारङ्गधर भगवान बीठुला । मैं गणत न आवै सर्बङ्गा । ११ ।
निःकण्टक निःकेवल कहिये ॥ धनं जय जल थल है महिये ॥ मिरत लोक पयाल समीपत । अस्थिर थान जिस है अभगा ॥ १२ ॥ पतित पावन दुख भय भंजन । अहङ्कार निवारण है भव खंडन । भगतो तोखित दीन क्रिपाला ॥ गुणे न कितही है भिगा ॥ १३ ॥ निरङ्कार अकल अडोलो । ज्योत सरूपी

सभ जग मैलो ॥ सो मिलै जिसु आप मिलाये । आपहुकोय न पावैगा ॥ १४ ॥ आपे गोपी आपे कान्हा । आपे गऊ चरावे बाना ॥ आपि उपावहि आपि खपावहि । तुध लेप नही इक तिल रङ्गा ॥ १५ ॥ एक जीह गुण कौन बखानै । सहस फनी सेष अन्त न जानै ॥ नव तन नाम जपै दिन राती । इक गुण नाही प्रभु कहि सङ्गा ॥ १६ ॥ ओट गही जगत पित सरणाया । भय भयानक जम दूत दुत्तरहै माया ॥ होहु क्रिपाल इच्छा करि राखहु । साध सन्तन के सङ्गि सङ्गा ॥ १७ ॥ दृष्टि मान

है सगल मिथेना। इक मागौ दान गोबिंद संत रेना॥ मस्तक लाइ परम पद पावौ॥ जिस प्रापति सो पावेगा ॥ १८॥ जिनको कृपा करी सुख दाते। तिन साधू चरण लै रीदै पराते॥ सगल नाम निधान तिन पाथा। अनहद सबद मन वाजङ्गा॥ १९॥ किरतम नाम कथै तेरे जिह्विवा। सत्त नाम तेरा परा पूर्बला॥ कहु नानक भगत पये सरणाई। देहु दरस मन रङ्ग लगा॥ २०॥ तेरी गति मिति तू है जाणहि। तू आप कथहि ते आप वखाणहि॥ नानक दास दासन को करियहु। हरि भावै दासा राख सङ्गा॥ २१॥

बसन्तुकी वार महल्ला ५

१ ॐ सति गुरु प्रसादि॥ हरि का नाम धियाइकै होहु हरिया भाई। करमिं लिखंते पाइयै इह रुत्ति सुहाई॥ वण तृण त्रिभवण मौलिया अमृत फल पाई। मिलि साधू सुख ऊपजै लत्थी सभ छाई॥ नानक सिमिरै एक नाम फिरि वहुड़ि न धाई॥ १॥ पंजे वधे महावली करि सच्चा ढोआ। आपणे चरण जपाइअन विच दय्यु खड़ोआ। रोग शोग सभि मिटि गये नित नवा निरोआ। दिन रैणि नाम धि-याइ दा फिरि पाइ न मोआ॥ जिस ते

उपज्या नानका सोई फिरि होआ ॥ २ ॥
कित्यहु उपजै कहि रहै कह माहि स-
मावै । जीय जन्त सभि खसमकै कोणकी
मति पावै ॥ कहनि धिआइनि सुणनि
नित से भगत सुहावै । अगम अगो-
चर साहिबो दूसर लवै न लावै ॥ सचु
पूरे गुरु उपदेशिया नानक सुणावै ॥ ३ ॥

गोंड महल्ला ५

राम राम सङ्कर बिउहार । राम राम
राम प्रान अधार ॥ राम राम राम कीरतन
गाए । रमत राम सभ रहिउ समाए ॥
सन्त जना मिल बोलहु राम । सभते
निर्मल पुरन काम ॥ रहाउ ॥ राम राम

धन सम्ब भण्डार । राम राम राम कर अहार ॥ राम राम बीसर नही जाय । कर क्रिपा गुर दीआ बताय ॥ २ ॥ राम राम राम सदा सहाय । राम राम राम लिव लाय ॥ राम राम जपि निर्मल भए । जनम जनम के किल विख गये ॥ ३ ॥ रमत राम जनम मरन नि-वारे । उचरत राम भै पार उतारे ॥ सभ ते ऊच राम प्रगास । निस बासर जप नानक दास ॥ ४ ॥

गौड महला ५

नाम निरंजन नीर नराइण । र-सना सिमिरत पाप बिलाइण ॥ १ ॥

रहाउ ॥ नारायण सभ माहि निवास
नारायण घट २ प्रगास ॥ नारायण कहते
नरक न जाहि । नरायण सेवि सगल फल
पाहि ॥ १ ॥ नारायण मन माहि आ-
धार । नारायण बोहिथ संसार ॥ ना-
रायण कहत जम भागि पलाइआ । ना-
रायण दन्त भंने डाइण ॥ २ ॥ नारा-
यण सद सद बखशिंद । नारायण
कीने सूख अनन्द ॥ नारायण प्रगट
कीनो प्रताप । नारायण सन्तको माई
बाप ॥ ३ ॥ नारायण साध सङ्ग नरा-
यण । बारमबार नरायण गायण ॥
बस्तु अगोचर गुर मिलि लही । नारा-

यण ओट नान दास गही ॥ ४ ॥ ३ ॥

गौंड महल्ला ५

गुरू गुरू गुरु करि मन मोर। गुरु बिना मैं नाही होर॥ गुरुकी टेक रहहु दिन राति। जाकी कोइ न मेटै दाति ॥ १ ॥ गुरु परमेसर एको जान। जो तिस भावै सो परवाण ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरु चरणी जाका मन लागै। दूख दर्द भ्रमताका भागै ॥ गुरुकी सेवा पाये मान। गुरु ऊपर सदा कुर्बान ॥ २ ॥ गुरुका दर्शन देखि निहाल। गुरु के सेवक की पूर न घाल॥ गुरुके सेवक को दुख न बियापै। गुरूका सेवक दह

दिसि जापै ॥ ३ ॥ गुरुकी महिमा कथन न जाइ । पार ब्रह्म गुरू रह्या स माइ ॥ कहु नानक जाके पूरे भाग । गुरु चरणी ताका मन लाग ॥ ४ ॥ ४ ॥

गोड महल्ला ५

गुरुकी मूरति मन महि ध्यान । गुरु के शबद मन्त्र मन मान ॥ गुरुके चरन रिदै लै धारो । गुरु पार ब्रह्म सदा नमस्कारो ॥ १ ॥ मतको भ्रमि भुलै संसारि । गुरु बिन कोइ न उतरस पारि ॥१॥ रहाउ ॥ भूलै को गुरू मारग पाया । और त्यागि हरि भगती लाया । जन्म मरन की त्रास मिटाई । गुरु पूरेकीबे

अन्त वडाई ॥ २ ॥ गुरु प्रसादि उरध कमल बिगाश। अन्धकार महि भया प्रगाश ॥ जिन कीया सो गुरु ते जान्या। गुरु किरपा ते मुगध मन मान्या ॥ ३ ॥ गुरु कर्ता गुरु करणै जोग। गुरु परमेसर है भी होग ॥ कहु नानक प्रभु इहै जनाई। बिनगुरु मुक्ति न पाइय भाई ॥४॥

सोरठि महला ५

रामदास सरोवर नाते। सभि उतरे पाप कमाते ॥ निरमल होइ करिइ सनाना। गुरि पूरै कीने दाना ॥ १ ॥ सभि कुशल खेम प्रभि धारै। सही सलामति सभथोक उबारे ॥ गुरु का

सबद बिचारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साध सङ्गि मल लाथी। पार ब्रह्मु भएउ साथी ॥ नानक नामु धिआइआ। आनद पुरख प्रभु पाइआ ॥ २ ॥६५॥ १ ॥

सोरठि महला ५

विच करता पुरख खलोआ। वालु न विंगा होआ ॥ मजन गुरु आंदा रासे। जपि हरि हरि किलविख नासे ॥ १ ॥ सन्तहु राम दासु सरोवर नीका। जो नावै सो कुल तरावै उधारु होआ है जी का ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जै जै कार गुण गावै मन चिन्दअड़े फल पावै ॥ सही सलाम तिनाइ आए। अपणा प्रभु धिआए ॥ २ ॥

सन्त सरोवर नावै। सो जन परम गति पावै॥ मरै न आवै जाई। हरि हरि नामु धिआई॥ ३॥ इहु ब्रम्ह बिचार सुजानै। जिसु दइआल होइ भवानै॥ बाबा नानक प्रभु सरणाई। सभ चिन्ता गणत मिटाई॥ ४॥ ५७॥ २॥

सोरठि महला ५

ठांढि पाई करतारे। तापु छोडि गइआ परवारे॥ गुरि पूरै है राखी। सरणि सचेकी ताकी॥ १॥ परमेसरु आप होआ रखवाला। सांति सहज सुखखिन महि उपजे मनु होआ सदा सुखाला॥ १॥ रहाउ॥ हरि हरि नामु दियो दारू।

तिनि सगला रोगु बिदारू ॥ अपणी क्रपा धारी । तिनि सगली बात सवारी ॥ २ ॥ प्रभु अपना बिरदु समारिआ । हमरा गुणु अवगुणु न बीचारिआ ॥ गुर का सबदु भइउ साखी । तिनि सगली लाज राखी ॥ ३ ॥ बोलाइआ बोली तेरा । तू साहिबु गुणी गहेरा ॥ जपि नानक नामु सचु साखी ॥ अपने दास की पैज राखी ॥ ४ ॥ ५६ ॥

फुनहे महला ५

डिठे सभे थाव नही तुधु जेहिआ । बधोहु पुरखि बिधातै तांतू सोहिआ ॥ वसदी सघन अपार अनूप रामदास पुर ।

हरि हां नानक कसमल जायि नाइझै रा-
मदास सर ॥ १ ॥ नैण न देखहि साधसि
नैण बिहालिआ। करन न सुनहि नाद
करन मूंद घालिआ ॥ रसना जपै न
नामु तिलु तिलु करि कटीऔ। हरिहा बि-
सरै गीबिन्द नाम दिनोंदिन घटिऔ ॥ २ ॥

भैरवी महला ५

गुर कै शबदि तरै मुनि कीते इद्रादिक ब्र-
हमादि तरे। सनक सनन्दन तपसी जन
कीते गुर परसादी पारि परे ॥ १ ॥ भव
जलु बिन शबदै किउतरीऔ। नाम विना
जग रोगि बिआपि आदु बिधा डुबि डुबि
मरीऔ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरू देवा गुरु अ-

लख अभेवा। त्रिभवण सोझी गुरु की सेवा॥ आपै दाति करी गुरु दाते पाया अलख अभेवा॥२॥ मन राजा मन मनते मान्या मनसा मनहि समाई। मन योगी मन विनशि वियोगी मन समझै गुण गाई॥३॥ गुरु ते मन माखा शबद वीचारा ते विरले संसारा। नानक साहिब भरि पुरि लीणा साच शबदि निस्तारा॥४॥१॥

भैरो महल्ला ५

उठत सुखिया बैठत सुखिया। भौन ही लागै जाधैसि बुझिया॥१॥ राखा एक हमारा स्वामी। सगल घटाको अं-

ध्यामो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सोइ अचिन्ता जागि अचिन्ता । जहा कहा प्रभु तुं वर-तन्ता ॥ २ ॥ घर सुख वसिया बाहर सुख पाया । कहु नानक गुरु मन्त्र दृढ़ाया ॥ ३ ॥

रामकली महला ३ अनन्द

१ ओं सति गुर प्रसादि ॥ अनन्द भया मेरी माये सति गुरू मैं पाया । सति गुरु त पाया सहज सेती मन वजीया वधाईआ ॥ राग रतन परवारि परीया शबद गावण आईया । शबदो त गावहु हरी केरा मन जीनी वसाया ॥ कहै नानक अनन्द होआ सति गुरु मै पाया ॥ १ ॥

ए मन मेसा तू सदा रहु हरि नाले।
हरि नालि रहु तू मन्न मेरे दूख सभि वि-
सारणा। अङ्गीकार वह्नु करे तेरा का-
रज सभि सवारणा॥ सभ ना गल्ला
समरथ स्वामी सो क्यो मनहु विसारे।
कहै नानक मन्न मेरे सदा रहो हरि
नाले॥ २॥ साचे साहिबा क्या नाही
घर तेरे। घर ततेरे सभ किछु है जिसु
देहि सु पावये॥ सदा सिफति सलाह
तेरी नाम मन्न वसावये। नाम जिनके
मन्न वस्या वाजे शबद घनेरे॥ कहै
नानक सच्चे साहिबा क्या नाही घर
तेरे॥ ३॥ साचा नाम मेरा आधारो।

साच नाम आधार मेरा जिन भुक्खा सभि गवाइया। करि शांति सुख मन आइ वसि या जिन इच्छा सभि पुजाईया। सदा कुर्बाण कीता गूरू विटहु। जिस दिया इहि वडयाईया। कहै नानक सुणहु सन्तहु शवदि धरहु पियारो। साचा नाम मेरा अधारो॥ ४॥ वाजे पंच सबदि तितु घर सभागी। घर सभागै शबद वाजे कलाजितु घर धारिया। पंच दूत तुध वसि कीते काल कंटक मारिया॥ धुरि कर्म पाया तु धजिन्नु कौसि नाम हरि कै लागी॥ कहै नानक तहं सुख होआ तितु घर अन-

हद वाजे ॥ ५ ॥ आनन्द सुणहु वड भागी हो सगल मनोरथ पूरे। पार ब्रह्म प्रभु पाया उतरे सगल विसूरे। दूख रोग सन्ताप उतरे सुणी सच्ची बाणी। सन्त साजन भये सरसे पूरे गुरु तेजाणी। सुणते पुनीत कहते पवित्त सति गुरू रह्या भर पूर। बिनवन्त नानक गुरु चरण लागि वाजे अनहद तूरे ॥ ४ ॥

मुंदावणी महल्ला ५

थाल विचतिंन वस्तू पईओ सत सं-तोष वीचारो॥ अमृत नाम ठाकुर का पाया जिसका सभसु अधारो। जे को खावे जे को भुंचे तिसका होइ उधांरो।

एह वस्तु तजी नहजाई नित नित रखु उरधारी। तम संसारु चरण लग तरिये सभ नानक ब्रह्म पसारो ॥ १ ॥

सलोक महला ५

तेरा कीता जातो नाही मैनो जोगु कीतोई। मै निरगुणियारे को गुण नाही आपेतरसु पयोई। तरसु पया मिहराम तिहोई सति गुरु सजण मिलिया। नानक नाम मिलै ता जीवा तन मन थीवै हरिया ॥ १ ॥ २ ॥ ॥ पउड़ी ॥ तिथै तू समरथ जिथै कोइ नाहि। उथै तेरी रख अगनी उदर माहि ॥ सुण कै जमकै दूत नाइ तेरैह डिजाहि। भउ जल

विखम असगाहु गुरु सबदी पारि पाहि
जिन कौलगो प्यास अमृत सेई खाहि।
कलमहि एहो पुन्न गुण गोविन्द गाहि
सभ सैनौ कृपाल समाले साहि साहि।
बिरथा कोइ न जाइ जेआवै तुधु आहि॥
१॥ ३॥

सलोक महला ५

अन्तर गुरु अराधणा जिहवा जपि गुरु नाउ। नेत्री सति गुर पेखणा स्रवणी सुनणा गुरु नाउ। सति गुर सेती रतिआ दरगह पाईये ठाउ। कहु नानक किरपा करे जिस नो एह वथ- देए। जगमहि उतम काढी यहि विरले केई केए॥ १॥ ४॥

महल्ला ५

रखि रखण हारि आपि उबारिअनु। गुर की पैरी पाइ काज सवारि अन। हो आ आप दयाल मनहु नविसारि अन। साध जना कै संग भव जल तारिअन। साकत निन्दक दुसट खिन माहि बिदारि अन। तिसु साहिब की टेक नानक मनै माहि। जिस सिमरत सुख होइ सगलै दूख जाहि॥ ५॥

१ ॐ सति गुरु प्रसाद

धनाश्री महल्ला १ आरती

गगन मैथाल रवि चंद दीपक बने तारिका मण्डल जनक मोती॥ धूप:

मल: आन लो पवण चवरो करे सगल बन राइ फूलन्त ज्योती ॥ १ ॥ कैसी आरती होइ भव खंडना तेरी आरती। अनहता शबद वाजंत भेरी ॥ १ ॥ ॥ रहाउ ॥ सहस: तव: नयन: नना नयन है तोहि: को सहस मूरति ननाएक तोही॥ सहस पद बिमल ननाएक पदगन्ध बिन: सहस: तव: गन्ध इव चलतमोही ॥ २ ॥ सभ महि ज्योति ज्योति हैं सोइ॥ तिस दै चानणि सभ महि चानण होइ॥ गुरु साखी ज्योति परगट होइ॥ ज्योति सुभावै सु आरती होइ ॥ ३ ॥ हरि चरण कमल मकरन्द: लोभित मनो अन-

दिनी मोहिआही पियासा ॥ कृपा जल देहि: नानक: शारङ्ग: को: होइ: जाते तेरै नामवासा ॥ ४ ॥ १ ॥ धनश्री ॥ नाम तेरो आरती मज्जन मुरारे ॥ हरि के नाम बिन झुठे सगल पसारे ॥ १ ॥ रहाउ नाम तेरो आसनो नाम तेरो उरसा: नाम तेरो केसरोलै छिटकारे ॥ नाम तेरा अभुला नाम तेरो चंदनो घसि जपे नाम ले तु झहिको चारै ॥ १ ॥ नाम तेरा: दीवा: नाम तेरो बाती नाम तेरो तेल लै माहि पसारे ॥ नाम तेरे की ज्योति लगाई भयो उजियार भवन सगलारे ॥२॥ नाम तेरो तागा नाम फूलमाला भार

अठारह सगल जूठारे॥ तेरो कीया तुझहि क्या अर्पों नाम तेरा तुही चवर ढोलारे॥ ३॥ दश अट्ठा अठसठे चारे खाणी इहै वरतणि है सगल संसारे॥ कहै रविदास नाम तेरो आरती सत्य नाम है हरि भोग तुमहारे॥ ४॥ २॥

धनासरी

धूप दीप घ्रत साजि आरती॥ वारने जाउ कमला पती॥ १॥ मङ्गला हरि मङ्गला॥ नित मङ्गल राजा राम राय को॥ १॥ ॥ रहाउ॥ उतम दियरा निर्मल बाती॥ तुही निरञ्जन कमला पाती॥ २॥ राम भगति रामानन्द जाने

पूरन परमानन्द बखानै ॥ ३ ॥ मदन मुर्ति भय तारि गोबिन्दे ॥ सैण भणै: भजु: परमानन्दे ॥ ४ ॥ ३ ॥

॥ प्रभाती ॥

शुन्न संध्या तेरी देव देवाकरि अधपति आदि समाई ॥ सिध समाधि अन्त नही पाया लागि रहै शरनाई ॥ १ ॥ लेहु आरती हो पुरुष निरञ्जन सति गुरु पुजहु भाई ॥ ठाढा बृह्मा निगम बीचारै अलखन लखिया जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तत्तु तेल नाम की बाती दीपक देह उज्यारा ॥ जोति लाइ जगदीश जगाया बुझै बुझ नहारा ॥ २ ॥ पञ्चे शबद अनाहद

बाजे सङ्ग शारङ्ग पानी ॥ कवीरदास तेरी आरती कीनी निरङ्कार निर्बानी ॥ ३ ॥ ४ ॥

॥ धन्ना ॥

गोपाल तेरा आरता ॥ जो जन तुमारी भगति करंते तिनके काज सवा-रता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दालि सीधा मांगो घीउ ॥ हमारा खुशी करै नितजीउ ॥ पनीया छादन नीका ॥ अनाज मांगोसत सीका ॥ १ ॥ गऊ भैस मांगो लावेरी ॥ इक ताजनि तुरी चङ्गेरी ॥ घर की गीहन चङ्गी जन धन्ना लेवै मङ्गी ॥ २ ॥

आरता बाबा श्री चन्द जी

ॐ श्री चन्द बखाने गुरु नानक पूता।

अगम अडोल अथाह अव धूता ॥ १ ॥
आरता कीजै नानक साह पात साह
का। हरि हरि दीन दुनियाकि गुर सा-
हन साहका ॥ २ ॥ चार कुट जाको
है धर्म्म साला। सङ्गत गावै औ सबद
रसाला ॥ आरता: ॥ हरि हरि: ॥
कोट देवी जाकी जोत जगावै। कोट
तेतीस जाको उसतति गावै ॥ आरता:
हरि हरि: ॥ छिनवै कड़ोड़ जाकि चरन
पखारै। भार अठारह जाकी पुहपको
माला ॥ आ: ह: ॥ पवन राय जाको
चवर झुलावै। हरि रिखि मुनि औ धयान
लगावै ॥ आ: ह: ॥ पञ्च परवान है

सति गुर पूरा ॥ बाजै श्री सबद अनाहद तूरा ॥ आ: ह: ॥ घण्टा वाजे धुन ॐ अङ्कारा । अजर अखण्ड जाके झिल मिल तारा ॥ आ: ह: ॥ सत नाम है सोहं सारा । गुर नानक नाम सन्तन जी अधारा ॥ आ: ह: ॥ श्री चन्द ब-खानै गुर नानक पूता । अगम अडोल अथाह अवधूता ॥ आ: ह: ॥ सर्न परै की राख दयाला। गुर नानक तुमरे बाल गोपाला ॥ आ: ह: ॥ जो जन गुर नानक साहका आरता गावै । बसै जो बैकुण्ठ परम गति पावै ॥ आ:. ह: ॥ प्रीत सहित जो सुनै जो सुवावै । श्री

सति गुर चरनो मै जाय समावै ॥ आ-
रता: हरि हरि: ॥

सवया

आदि करो गुर देवको बंदन वाहि गुरू मुखमाहि उचारी। दो कर जोर धरो चरना पर जाउ सदा गुरुको बलि-हारी ॥ कान सुनो उपमा गुरकी गुर मूरति ध्यान रिदै उर धारी। श्री वाहि गुरू गुर नानक साहिब सेवक सरण गह्यो दरबारी ॥ १ ॥ आदि निरंजन है गुरू नानक धार कै मु-रति है जग आयो। लोक सुन्यो पर-लोक सुन्यो बिध लोक सुन्यो सभ द-

रसन पायो ॥ सङ्कत पार उतारन को गुरू नानक साहिब पन्थ चलायो । श्री वाहि गुरु गुर नानक साहिब तारक मूरति है जग आयो ॥ २ ॥ श्री वाहि गुरू गुर धन गुरू गुर सत गुरू गुर सरन तुमारी । राम हरे हरि राम हरे हरि राम हरे हरि राम मुरारी ॥ कृष्ण हरे हरि कृष्ण हरे हरि कृष्ण हरे जिन द्रौपद तारी । श्री वाहि गुरु गुर नानक साहिब सेवक सरण गह्यो दरबारी ॥ ३ ॥ एकनके सिर मूड मुडावत एकनके सिर सोभत केसा । एकनके जटा जुट बिराजत एकनके सिर टोपीको भेसा ॥

और अनन्द प्रकास कीइ एक नाम उदासी सो सुन्दर भेसा । श्री चन्द कहै धन नानक जो जिन गोबिन्द गोबिन्द कियो उपदेशा ॥ ४ ॥ सेली सरूप अखंड भभूत जोत जड़ाउ जंजीर बीचारा । तनकी खफनी गुटका सुख मै गुर ग्यानकी बाक सदीव उचारा ॥ जतकी जुगती येही जान लियो मन मृगको मार मृगा न सुधारा । आव धुत कहै निरवाण गुरू संजम सील लंगोट हमारा ॥ ६ ॥ ढूढ फिरियो त्रिलोकीकि भीतर पुरन ब्रह्म बसै सभ माही । कीते हो तीरथ खोज फिरयो पुन कीतेही त्याग फिरयो बन

माही ॥ केतही बेद पुरान बखानत केतही अंग भभूत रमाही । कहै श्री चंद बिलासकी मुरति है घट मै घरकी सुध नाही ॥ ७ ॥ सबया ॥ पाइ गहे जबते तुमरे तबते कोऊ आख तरे नही आनिउ । राम रहीम पुरान कुरान अनेक कहिउ मत इक मानिउ ॥ सिमृत सासत्र बेद सबै बहु भेद कहिऊ हम एकन जानिउ । श्री असपान क्रपा तुमरी कर मै कहिउ सभ तोहि बखानिउ ॥ ॥ दोहरा ॥ सगल दुवारको छाडकै गहयो तुहारो दुवार । बाह गहेकी लाज अस गोबिंद दास तुहार ॥ १ ॥ लोप चंडका

होगई सुर पतिको दे राज। दानो मारो
अभेख कर कीने संतन काम॥ २॥ स-
वया॥ याते प्रसन्न भए है महामुनि देवन
के तप मैं सुख पावै। यग वारै इक वेद
ररै भव ताप हरै मिल ध्यानहि लावै॥
झालर ताल मृदङ्ग उपङ्ग रबाब लीए
सुर साज मिलावै। किंनर गन्धरब
गान करै गन जछ अपछर निर्त दि-
खावै॥ २॥ सवया॥ संखनकी धुन
घंटनकी कर फूलनकी बरखा बरखावै।
आरति कोट करै सुर सुन्दर पेख पुरन्द-
रके बल जावै॥ दानत दछन दै कै
प्रदछन भाल मै कुंकम अछत लावै। होत

कुलाहल देव पुरीं मिल देवन कै कुल मङ्गल गावै ॥ ३ ॥ दोहरा ॥ ऐसे चंड परतापती देवन बढिउ प्रताप। तीनलोक जै जै करै ररै नाम सत जाप ॥ ४ ॥ दोहरा ॥ गुर नानक गुरू गोबिन्द सिंघ पुरन गुर अवतार। जग मग जोति बिराई श्री अब चल नगर अपार ॥ ५ ॥

१ ॐ सति गुर प्रसादि

सलोक

गुर देव माता गुर देव पिता गुर देव स्वामी प्रमेसरा। गुर देव सखा अग्यान भंजन गुर देव बंधप सहोदरा ॥ गुर देव दाता हरि नाम उपदेसै गुर देव मंत

निरोधरा। गुर देव सान्ति सत बुधि सुरति गुर देव पारस परसपरा॥ गुर देव तीरथ अंमृित सरोवर गुर ग्यान भं-जन अपरंपरा। गुर देव करता सभ पाप हरता गुर देव पतित पवित करा गुर देव आदि जुगादि जुग जुग गुर देव संत हरि जपउ धरा। गुर देव संगत प्रभ मेल कर क्रिपा हम मूढ़ पापी जित लग तरा॥ गुर देव सत गुर पार ब्रह्म प्र-मेसर गुर देव नानक हरि नमसकरा॥१॥

पाउणी

हे अचुत हे पार ब्रह्म अबिनासी अघ नास। हे पुरर्नहेसर्ब मै दुख भंजन गुण

तास ॥ हे सङ्गी हे निरंकार हे निरगुण सभ टेक। हे गोबिन्द हे गुण निधान जाके सदा विवेक ॥ हे अपरंपर हरि हरे है भी होवन हार। हे संतह के सदा सङ्ग निधारा आधार ॥ हे ठाकुर हउ दासरो मै निरगुन गुण नही कोय। नानक दीजै नाम दान राखउ हीअै परोय ॥ २ ॥

१ ओं श्री वाहि गुरू श्री की फते

श्री भगवती जी सहाए। वार श्री भगउती जी पात साही ॥ १० ॥ पउड़ी प्रिथम भगौती सिमर कै गुरु नानक लई धियाइ। फिर अङ्गद गुर ते अमर दास

राम दासै होई सहाइ ॥ अर्जन हर गोबिंद नू सिमरो स्री हरि राइ । स्री हरि क्रिसन धिआईऐ जिस डिठे सभ दुख जाइ ॥ गुर ते गबहादर सिमरिऐ घर नव निधि आवे धाइ । सभ थाइ होइ सहाइ ॥ १ ॥

॥ इति समाप्त ॥